K. Navneet M.A III 23/10/2021

2

और वक्सवाम तथा होमर की मुख्य भूमिका है, के द्वारा किए गए शोधों से यह स्पष्ट हुआ की टाइप II मनोविदलता का कारण असामान्य मस्तिष्कीय संरचना होती है।

कैनन तथा मैक्रो (Cannon & Macro 1995) ने भी अपने शोधपूर्ण अध्ययनों में पाया कि मस्तिष्क के वेन्ट्रिकल के बड़ा हो जाने के कारण व्यक्ति में मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। इन्होंने पाया कि ऐसे रोगियों के मस्तिष्क के बायें तरफ का वेन्ट्रीकल दायें तरफ के वेन्ट्रीकल से अधिक बड़ा हुआ रहता है। ज्ञातव्य है कि वेन्ट्रीकल वह स्थान होता है जहाँ मस्तिष्कीय तरल पदार्थ (cerebrospinal fluid) जमा होता है।

रैनी (Raine, 1982) तथा सुल्डर्ग (Suddath, 1992) द्वारा टाइप-II मनोविदलिता से पीड़ित रोगियों के मस्तिष्कीय अध्ययन के पश्चात् पाया कि इनके अग्रपालि, पृष्ठ मस्तिष्क और के विभाग सामान्य से छोटे होते हैं।

इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि असामान्य मस्तिष्कीय संरचना के कारण मनोविदलता उत्पन्न होता है।

(b) मनोवैज्ञानिक विचारधारा (psychological viewpoints) —

मनोविदलता के कारणों की व्याख्या विभिन्न मनोवैज्ञानिक विचारधाराओं के आधार पर भी किया गया है जिनमें से मुख्य इस प्रकार हैं —

(i) मनोगतिकी विचार (psychodynamic views) —

यह विचार फ्रायड के द्वारा दिया गया है इनके अनुसार मनोविदलता को उत्पत्ति में दो प्रकार मनोवैज्ञानिक

K. Naved M.A III Sem 23/10/20

प्रक्रिया सम्मिलित होती है। पहली अवस्था में प्रतिगमन तथा दूसरी अवस्था में अहम् के नियंत्रण को पुनर्स्थापित के लिए पुनः प्रयास। जब किसी व्यक्ति का बाह्य वातावरण काफी कठोर एवं धमकीपूर्ण हो जाता है, तो वह अपने जीवन के आरंभिक काल में प्रतिगमित हो जाता है क्योंकि अहम् निर्माण के पहले एवं बाह्य वातावरण के अस्तित्व को स्वतंत्र रूप में पहचान करने की अवस्था से पहले ही प्रतिगमित हो जाता है। फलतः रोगी प्राथमिक आत्मरति (Primary narcissism) में प्रतिगमित होकर केवल अपनी ही अवस्थाओं को स्वीकार करता है जिससे उसमें आत्म असंवतता, व्यामोह आदि के लक्षण विकसित हो जाते हैं।

(II) व्यवहारात्मक विचार (Behavioural view) — व्यवहारात्मक विचारधारा के समर्थक मनोविज्ञानियों द्वारा मनोविदलता की उत्पत्ति के कारणों की व्याख्या क्रियाप्रसूत अनुबंधन के आधार पर किया गया है। इस विचारधारा के पोषक मनोवैज्ञानिकों एवं मनोचिकित्सकों का मत है कि परिवार, पास-पड़ोस एवं सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक संकेतों अर्थात् दूसरे लोगों की हँसी, टिप्पणी, अप्रसन्नता पर उचित ध्यान देना सीख लिया जाता है। परन्तु जब व्यक्ति किसी खास कारण या अन्य परिस्थितिजन्य कारणों से सही सामाजिक संकेतों से विमुख होकर असंगत संकेतों पर ध्यान देना अधिक पसंद करने लगता है, तब उसके व्यवहार में विचित्रता पढ़ने के कारण मनोविदलता के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

(III) पारिवारिक विचार (Family view) — मनोविज्ञानियों द्वारा अपने अध्ययनों में पाया गया है कि मनोविदलता की उत्पत्ति के कारणों में पारिवारिक एक भूमिका का महत्वपूर्ण है। इन्होंने अपने अध्ययनों के

पाया कि मनोविदालितायी माँ-पिता के बच्चों में, द्वय-बंध संचार वाले माता-पिता, विशेष प्रकार की पारिवारिक संरचना वाले परिवार में पैदा हुए बच्चों और जिस परिवार में माँ-बाप में अधिक मानसिक संघर्ष वाले परिवारों में उत्पन्न बच्चों में मनोविदलता के लक्षण अधिक उत्पन्न होते पाए गए हैं।

(IV) अस्तित्ववादी विचार धारा (Existential view)-
मनोविदालिता की अस्तित्ववादी व्याख्या लैंग (Laing, 1967) द्वारा किया गया। इनका मत है कि वास्तव में मनोविदालिता एक धनात्मक या रचनात्मक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति सामाजिक एवं पारिवारिक वातावरण द्वारा उत्पन्न भ्रांति (confusion) तथा दबाव से अपने आप को चंगा करने की कोशिश करता है। इनका मत है कि अगर व्यक्ति को इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए अकेले छोड़ दिया जाय, तो मनोविदालिता के रोगी निश्चित रूप से समन्वय के एक स्वस्थ स्तर की प्राप्ति कर सकेंगे। परन्तु प्रायः सभी मनोविज्ञानियों द्वारा इनके इस व्याख्या को अमान्य कर दिया गया कि मनोविदालिता एक धनात्मक [illegible] या रचनात्मक प्रक्रिया है। इनके कुछ आलोचकों का मत है कि मनोविदालिता एक ऐसी समस्या है जिससे रोगी में काफी तकलीफ उत्पन्न करता है।

(V) संज्ञानात्मक विचार (Cognitive view) –
मनोविदालिता के कारणों पर प्रकाश डालने के लिए संज्ञानात्मक दृष्टिकोण का भी सहारा लिया गया है। इस संदर्भ में गारेटी (Garety, 1991) तथा माहेर (Maher, 1992) का अध्ययन उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि क्योंकि [illegible] विकृत हो जाता है कि लोग उसे [illegible] करने की कोशिश कर रहे हैं। इस प्रकार